

# ग्रामीण प्रजातंत्र सफलता में सूचना एवं संचार तकनीकी का महत्व

Renu Bala\*

M.A, M.Phil. (Political Science)

सारांश - इक्कीसवीं सदी सूचना एवं संचार की सदी बनकर उभरी है। उसने सूचना प्राप्ति एवं संचार साधनों के अनेक रूप-प्रतिरूप हमारे सामने उपलब्ध करा दिए हैं। एक युग था, जब संचार के सीमित साधन ही उपलब्ध थे। आज जनसंचार के आधुनिक साधनों ने विश्व की सीमाएँ लाँघकर अन्तरिक्ष में प्रवेश कर लिया है। लेकिन प्रकृति का यह कैसा विरोधाभास है कि एक ओर तो मानव अपने कल्याण की दिशा में कर्मरत है वहीं दूसरी ओर उसकी विध्वंसकारी प्रवृत्तियाँ उसे स्वार्थ की पूर्ति में लगा देती हैं। संचार के वैज्ञानिक साधनों ने जहाँ विकास के मार्गों को प्रशस्त किया है वहीं साइबर अपराधों को प्रोत्साहन दिया है। वर्तमान में, मानव ने प्रौद्योगिकी के नए आयाम खोज निकाले हैं और स्थिति यह है कि उद्योग हो अथवा कोई भी महत्वपूर्ण योजना, चिकित्सा का क्षेत्र हो अथवा मनोरंजन की दुनिया, जनसंचार के अभाव में उसके अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ग्रामीण विकास विस्तृत शब्द 'विकास' का ही एक भाग है। विकास सम्पूर्ण विश्व के व्यक्तियों, परिवारों, समुदायों एवं राष्ट्रों द्वारा सार्वभौमिक उद्देश्यों को संजोये रखने का तरीका है। विकास प्राकृतिक रूप में भी पृथ्वी पर उपस्थित प्राणी मात्र को नैसर्गिक रूप से बने रहने एवं विकास के लिए प्रेरित करता है।

-----X-----

## प्रस्तावना

### सूचना एवं संचार तकनीकी

सदैव से ही प्रकृति के संकेत हमें सूचना, संदेश अथवा समाचार का भास देते आए हैं। उन्हें जनसंचार का माध्यम माना गया है। उदाहरणार्थ गौरैया नामक चिड़िया अगर पानी में क्रीड़ा करते देखी जाती है तो यह बरसात आने का संकेत माना जाता है। दूर-दराज तक जहाँ जनसंचार माध्यमों का जाल बिछ चुका है। आज भी ऐसी मान्यताएं घर किए हुए हैं। चीन और गुजरात में हाल ही में आए भूकम्प की पूर्व सूचना जानवरों के विचित्र व्यवहार से सम्प्रेषित हुई थी। विशेषज्ञों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि चमगादड़ को अपने शरीर में विद्युत तरंगों की अनुभूति होती है। शिक्षा एवं विज्ञान के विकास से मानव ने प्रकृति में व्याप्त विद्युत तरंगों एवं अन्य स्रोतों की अपार शक्ति को खोजकर संचार माध्यमों की जादू नगरी का निर्माण कर दिया है। कृषि हो अथवा उद्योग, शिक्षा हो अथवा मनोरंजन, चिकित्सा हो अथवा विज्ञान हर क्षेत्र में जनसंचार माध्यम का प्रबंधन एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा है। उसने हमारी जीवन दिशा ही बदलकर रख दी है। संचार माध्यमों की विस्तृत व्याख्या, प्रबंधन एवं उपयोग के अभाव में आज मानव

जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है (हाशमी ए.एच., दिल्ली, 1996)।

सूचना का तात्पर्य होता है जानकारी, जब किसी व्यक्ति विशेष, समुदाय संगठन या समूह को आवश्यक जानकारी या अन्य जानकारियाँ प्राप्त होती हैं वही सूचना की श्रेणी में आते हैं। संचार प्रेषक का प्राप्तकर्ता को सूचना भेजने की प्रक्रिया है जिसमें जानकारी पहुँचाने के लिए ऐसे माध्यम का प्रयोग किया जाता है जिससे संप्रेषित सूचना प्रेषक और प्राप्तकर्ता दोनों समझ सके, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी विभिन्न माध्यमों के द्वारा सूचना का आदान-प्रदान कर सकते हैं (वही, दीनोदय, 24 जनवरी, 1981)। मनुष्य के अस्तित्व की निरन्तरता के लिए संचार या सम्प्रेषण एक प्रभावी माध्यम है जो किसी भी समूह अथवा समाज के निर्माण हेतु एक प्रकार्यात्मक पूर्वावश्यकता है। संचार कुछ निश्चित प्रतीकों एवं चित्रों के माध्यम से दो या अधिक सामाजिक इकाईयों के मध्य विचार, सूचना, ज्ञान, अभिवृत्ति एवं भावनाओं के विनिमय की एक प्रक्रिया है (वही, स्नेह, अक्टूबर, 2001)। इस प्रक्रिया के द्वारा हम दूसरों को समझते हैं और बदले में दूसरों द्वारा समझे जाने का प्रयास भी करते हैं। संचार से व्यक्ति सूचनाओं को दूसरों तक

पहुँचाता ही नहीं है अपितु सूचनाओं को ग्रहण भी करता है (पटैरिया, मनोज कुमार, 1997)। संचार समूह निर्माण की एक आवश्यक दशा है, इसके बिना समूह का अस्तित्व सम्भव ही नहीं है। संचार किसी भी सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक तत्वों की प्रकृति पर आधारित है। संचार उस समय होता है जब एक स्थान और समय की घटनाएं दूसरे स्थान और समय की घटनाओं से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होती है। अतः संचार किसी वस्तु के सम्बन्ध में समान तथा सहभागी ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रतीकों के उपयोग पर निर्भर होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि संचार मानव जीवन को अर्थपूर्ण व उद्देश्यपूर्ण बनाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधुनिकतम प्रगति ने जहाँ विकास के नए द्वार खोले हैं वहीं भारत जैसे विकासशील देश में अनेकानेक रीति-रिवाज, परम्पराएँ, अंधविश्वास और पाखण्ड बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं। ऐसे में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए सामाजिक चेतना का विकास हुआ। इसी विकास में संचार की विभिन्न तकनीकियों का प्रयोग किया जा रहा है (भानावत, संजीव, जयपुर, 2010)।

### भारत में सूचना एवं संचार तकनीकी का विकास

भारत में लघु तथा व्यापक दोनों ही स्तरों पर विज्ञान व प्रौद्योगिकी, संचार और विज्ञान लोकप्रियकरण प्रयासों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने, समन्वित करने, उत्प्रेरित करने और उन्हें समर्थन देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1982 में एक शीर्ष संस्था के रूप में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद की स्थापना की जिसने 1984 में अपना कार्य शुरू किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने 1989 में एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में 'विज्ञान प्रसार' का गठन किया, जिसने बड़े पैमाने पर टी.वी. कार्यक्रम, ऑडियो कैसेट, सीडी रोम, प्रकाशनों जैसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी लोकप्रियकरण के सॉफ्टवेयर विकसित करने और उनके प्रचार-प्रसार की दिशा में कार्य किया। आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अन्य टी.वी. चैनल विभिन्न प्रकार के विज्ञान कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। इसके साथ ही सामुदायिक रेडियो भी विज्ञान संचार के लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभर रहा है। केन्द्र तथा राज्य सरकारों, बिड़ला समूह तथा जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि ने देश में विभिन्न स्थानों पर अनेक तारामंडल स्थापित किए हैं (भारत की सम्प्रदा, नई दिल्ली 2005)। सरकारी, गैर-सरकारी, स्वैच्छिक निजी तथा व्यक्तिगत स्तरों पर विज्ञान संचार एवं विज्ञान लोकप्रियकरण की दिशा में विभिन्न प्रकार के अन्य प्रयास भी किए जा रहे हैं। अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएँ जैसे राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, वैज्ञानिक एवं

औद्योगिक अनुसंधान परिषद, आकाशवाणी, दूरदर्शन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, आदि वैज्ञानिक सूचना के प्रचार-प्रसार और लोगों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति जाग्रत करने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं (वहीं, विज्ञान संचार, 2001)।

भारत में विज्ञान संचारकों द्वारा जन सामान्य तक अपनी पहुँच बनाने के लिए संचार के अनेक साधनों, तरीकों का उपयोग किया गया है। भारत में मौजूद अत्यधिक विविधता को ध्यान में रखते हुए संचार के प्रत्येक तरीकों का अपना महत्व और उपयोगिता है।

### ग्रामीण विकास

ग्रामीण विकास किसी भी राष्ट्र की उन्नति का परिचायक होता है। अतः विश्व का प्रत्येक राष्ट्र अपने आपको अग्रणी रखने के लिए विभिन्न सूचना एवं संचार तकनीकियों का आश्रय लेता है जिससे वहाँ केवासियों को एक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर सुधार हो सके। ग्रामीण विकास शब्द ग्रामीणों का जीवन स्तर सुधारने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास को प्रदर्शित करता है। इस अर्थ में, वह व्यापक एवं बहु आयामीय संकल्पना है। इसमें कृषि सहायक गतिविधियाँ, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग और शिल्पकारी, सामाजिक, आर्थिक अधोसंरचना, सामुदायिक सेवाएँ एवं सुविधाएँ और इन सभी से ऊपर ग्रामीण क्षेत्रों के मानव संसाधनों का विकास सम्मिलित है। एक तथ्य के रूप में ग्रामीण विकास विविध भौतिक, तकनीकी, आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं संस्थागत कारकों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों का अन्तिम परिणाम है। एक रणनीति के रूप में इसकी संरचना वर्ग विशेष के लोगों की, विशेषतः ग्रामीण गरीबों की आर्थिक एवं सामाजिक समृद्धि में सुधार हेतु की गई है। एक अनुशासन के रूप में इसकी प्रकृति बहुअनुशासनिक है जिसमें कृषिगत, सामाजिक, व्यावहारिक, अभियांत्रिक एवं प्रबंधकीय विज्ञानों का प्रतिनिधित्व है (सिंह, कटार, 2011)।

ग्रामीण विकास एक ऐसी रणनीति है जो समूह विशेष के लोगों, ग्रामीण गरीब पुरुषों एवं स्त्रियों को समर्थ बनाती है। उन्हें एवं उनके बच्चों को उनकी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं से अधिक अर्जित करने के योग्य बनाती है।

## विकास के विभिन्न आयाम-सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक

आधुनिक सभ्य समाजों में राज्य लोकतांत्रिक, कल्याणकारी एवं प्रशासकीय व्यवस्था का प्रवर्तक है। 'मानव संसाधन' को विकसित तथा संवर्धित करने के लिये नियोजित प्रयास किये जाते हैं क्योंकि मानव ही अन्य संसाधन यथा प्राकृतिक संसाधन, भौतिक संसाधन, तकनीकी संसाधन तथा वित्तीय संसाधन इत्यादि का सदुपयोग सुनिश्चित कर सकता है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाते हुए 'आर्थिक नियोजन' को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की तथा इस हेतु वार्षिक एवं पंचवर्षीय योजनाओं का सहारा लिया गया। सन् 1950 में योजना आयोग की स्थापना करते समय देश के केन्द्रीय नेतृत्व ने विकास का जो लक्ष्य निर्धारित किया था वह था- 'नियोजित प्रयासों से प्रत्येक नागरिक का आर्थिक, सामाजिक स्तर उन्नत बनाना'। निस्संदेह इस हेतु आर्थिक विकास को सामाजिक विकास के साथ विश्लेषित किया जाना अनिवार्य है। विकास एक बहुआयामी तथा जटिल अवधारणा है। वस्तुतः विकास एक मानसिक स्थिति है, भौतिक उन्नति है, आधुनिक राज्यों का लक्ष्य है, लोक प्रशासन का दर्शन है, जीवन की आकांक्षा है तो उच्च से उच्चतर एवं श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर होने की सार्वकालिक प्रक्रिया है।

### भारत में ग्रामीण विकास का स्वरूप

सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों के चलते आज ग्रामीण भारत की तस्वीर बदल रही है। आज यहाँ सड़के नहीं थी वहाँ पक्की सड़के हैं, जहाँ लैण्डलाइन फोन नहीं थे वहाँ आज मोबाइल सेवाएं भी पहुँच गई हैं। सरकार के प्रयासों से ही ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सरकार वर्तमान में गांवों के विकास के प्रति बराबर ध्यान दे रही है। साथ ही जरूरत इस बात की भी है कि विभिन्न राज्यों और सभी क्षेत्रों में गरीबी निवारण कार्यक्रमों और रोजगार सृजन योजनाओं का पुनर्मूल्यांकन कर उनमें आ रही कमियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। संसाधनों का आवंटन इस प्रकार किया जा रहा है कि सही समय पर सही तरीके से सही लोगों और सही क्षेत्रों तक पहुँचाया जा सके। भारत गांवों का देश है और इसकी 78 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अतः भारत के विकास के लिए आवश्यक है ग्रामीण विकास। बिना ग्रामीण विकास के श्री अब्दुल कलाम जी का 2020 तक भारत के विकसित देश बनने का सपना सिर्फ सपना ही रह सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में कृषि, उद्योग, यातायात, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य और हमारी अर्थव्यवस्था को

हर व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए भारत सरकार ने बड़ी-बड़ी योजनाएं लागू की हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही भारत सरकार ग्रामीण विकास के लिये कटिबद्ध रही है। पंचवर्षीय योजनाओं में, वार्षिक बजट में तथा अलग से लागू की गई योजनाओं में ग्रामीण विकास हमेशा से सरकार का प्राथमिक उद्देश्य रहा है। वर्तमान में भी 'नीति आयोग' के माध्यम से जो भी विकासवादी नीतियाँ सृजित एवं क्रियान्वित की जा रही हैं, वे सभी अधिकांश रूप से ग्रामीण विकास पर केन्द्रित हैं।

सरकार की ग्रामीण विकास या निचले तबके की जागरूकता इसी बात से झलकती है कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना का शीर्षक ही समावेशी विकास रख दिया गया और उस पर पहल जारी है। भारत सरकार ने ग्रामीण गरीबों के लिए कोई एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अनेकों कार्यक्रम शुरू किए हैं जो ग्रामीण भारत के विकास के लिए एक मार्ग का काम कर रहे हैं। प्रारम्भिक योजनाओं में ही सरकार द्वारा देश के ग्रामीण क्षेत्रों और ग्रामीणों को विकास के लाभ उपलब्ध कराने के लिए अनेक रोजगारपरक और गरीबी निवारण की विशेष योजनाओं और कार्यक्रमों को संचालित करने के साथ-साथ वहाँ मौलिक सुविधाओं के लिए विशेष प्रयास किए जाते रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भले ही विकास की दर को वहाँ के लोगों की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं अथवा अपेक्षाओं के अनुरूप कर पाने में हम पूरी तरफ सफल नहीं हो सके हो लेकिन वास्तविकता यह है कि वहाँ के विकास के लिए चलाई जा रही योजनाओं के जरिए वहाँ के स्कूलों, सड़कों, बिजली, पानी, मकान जैसी मूलभूत आवश्यक सुविधाओं को काफी मात्रा में गांवों तक पहुँचाने में सफल हो सके हैं।

भारत जैसे विकासशील देश के सामने आर्थिक विकास में मुख्य बाधा गरीबी और बेरोजगारी है। ये तो प्रत्यक्ष कारण है लेकिन वास्तव में इनके पीछे हमारी मूलभूत सुविधाओं की कमी ही है। लेकिन देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और योजनाओं के संचालन के माध्यम से सरकार द्वारा ग्रामीण भारत में तीव्र और स्थायी विकास तथा सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाने के प्रयास किए गए हैं।

### प्रजातंत्र सफलता में सूचना एवं संचार तकनीकी का महत्व

लोकसंपर्क का अर्थ बड़ा ही व्यापक और प्रभावकारी है। लोकतंत्र के आधार पर स्थापित लोकसत्ता के परिचालन के लिए ही नहीं बल्कि राजतंत्र और अधिनायकतंत्र के सफल संचालन के लिए भी लोकसंपर्क आवश्यक माना जाता है। कृषि, उद्योग, व्यापार, जनसेवा और लोकरुचि के विस्तार

तथा परिष्कार के लिए लोकसंपर्क की आवश्यकता है। लोकसंपर्क का शाब्दिक अर्थ है 'जनसाधारण से अधिकाधिक निकट संबंध'। वर्तमान युग में लोकसंपर्क के सर्वोत्तम माध्यम का कार्य समाचारपत्र करते हैं। इसके बाद रेडियो, टेलीविजन, चलचित्रों और इंटरनेट आदि का स्थान है। नाट्य, संगीत, भजन कीर्तन, धर्मोपदेश आदि के द्वारा भी लोकसंपर्क का कार्य होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत जुलूस, सभा, संगठन, प्रदर्शन आदि की जो सुविधाएँ हैं उनका उपयोग भी राजनीतिक दलों की ओर से लोकसंपर्क के लिए किया जाता है। डाक, तार टेलीफोन, रेल, वायुयान, मोटरकार, जलपोत और यातायात तथा परिवहन के अन्यान्य साधन भी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय संपर्क के लिए व्यवहृत किये जाते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि भी लोकसत्ता और लोकमत के मध्य लोकसंपर्क की महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं।

वर्तमान समय में प्रजातंत्र को अत्यधिक सफल बनाने के लिए एवं जनता को अपनी घोषणाओं एवं पद्धतियों की जानकारी प्रदान करने के लिए समस्त राजनीतिक दल सूचना एवं संचार तंत्रों का उपयोग कर रहे हैं। जनप्रतिनिधि अपने चुनावी कार्यालयों को मीडिया हब बनाये हुए हैं इसके अंतर्गत चुनावी क्षेत्र की समस्त जानकारी एवं अपने कार्यकर्ताओं को उससे जुड़े हुए जैसे मोबाइल एसएमएस के द्वारा जनता को विभिन्न त्योहारों की बधाईयां देना तथा अपने एजेंडों की जानकारी देना साथ ही साथ जिला स्तरीय कार्यकर्ताओं से लेकर ग्रामीण कार्यकर्ताओं को मोबाइल, लैपटॉप इत्यादि उपलब्ध करये जाते हैं, जिससे निर्वाचन कार्यालय के मतदाताओं की नामावली तथा विभिन्न समाचार पत्रों में अपने एजेंडों की जानकारी तथा समय पर विडियो कान्फ्रेंसिंग और मोबाइल से भाषण इत्यादि सम्मिलित है। इसका ताजा उदाहरण है वर्तमान की भारत सरकार के उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, हरियाणा, महाराष्ट्र राज्यों की सरकारें जिन्होंने सूचना संचार तकनीकी के जबरदस्त उपयोग के भारी बहुमत से सरकार का निर्माण किया।

## निष्कर्ष

भारत की 77 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों के हालत ही हमारे देश का वास्तविक प्रतिबिम्ब है। भारतवर्ष उस गति से तरक्की नहीं कर पा रहा है जिस गति से उसे करनी चाहिए। 125 करोड़ लोगों के देश में लगभग 40 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे हैं और यह आबादी अधिकांश रूप से गाँवों में ही है। हमारी आर्थिक प्रगति की दर 7 प्रतिशत के आसपास रही है, पर इसका पूरा लाभ गाँवों को नहीं मिला है। इसके अलावा बेरोजगारी, भुखमरी, महिलाओं पर अत्याचार,

जमीनों के झगड़े, कम उत्पादन व उत्पादकता और ठण्डे पड़े शेयर बजार इस तथ्य के द्योतक है कि भारत का आर्थिक-राजनीतिक-सामाजिक विकास अभी बहुत दूर है। सूचना तकनीक ग्रामीणों तक, जिस जगह चाहे, जब चाहें और जिस तरीके से चाहें, सूचना पहुँचाने का कार्य करती है। आई.टी. को सूचना तकनीक के नाम से जाना जाता है। इन दो शब्दों ने पूरे विश्व को एक तूफान की तरह अपनी चपेट में ले लिया है। कुछ प्रबुद्ध लोगों ने मानव सभ्यता के लिए सूचना तकनीक को इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे सुन्दर एवं महत्वपूर्ण उपहार माना है। आज के परिदृश्य में इन दो शब्दों का महत्व आधुनिकता एवं विकास के शब्दकोश को सभी शब्दों से कहीं बढ़कर है, जो केवल कम्प्यूटर तक सीमित न रहते हुए सूचना तकनीक अपने अन्दर एक वृहद रूप समेटे हुए है। इंटरनेट, फैक्स, मोबाइल, ई-व्यापार, ई-गवर्नेन्स, ई-पेमेन्ट, ई-पंचायत, अभिषरण तकनीकी, साफ्टवेयर, बेतार इंटरनेट, एम-व्यापार और डी-व्यापार, आदि सब सूचना तकनीक के विभिन्न प्रतिरूप हैं। इन आधुनिक संचार तकनीकों ने आम आदमी के लिए सूचना प्राप्ति के असंख्य द्वार खोल दिये हैं। वर्तमान युग में लोकसंपर्क के सर्वोत्तम माध्यम का कार्य समाचारपत्र करते हैं। इसके बाद रेडियो, टेलीविजन, चलचित्रों और इंटरनेट आदि का स्थान है। नाट्य, संगीत, भजन कीर्तन, धर्मोपदेश आदि के द्वारा भी लोकसंपर्क का कार्य होता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत जुलूस, सभा, संगठन, प्रदर्शन आदि की जो सुविधाएँ हैं उनका उपयोग भी राजनीतिक दलों की ओर से लोकसंपर्क के लिए किया जाता है। डाक, तार टेलीफोन, रेल, वायुयान, मोटरकार, जलपोत और यातायात तथा परिवहन के अन्यान्य साधन भी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय संपर्क के लिए व्यवहृत किये जाते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भानावत, डॉ. संजीव, विकास एवं विज्ञान संचार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.-160, 2010
2. वही, विज्ञान संचार, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
3. पटैरिया, मनोज, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ.-19-20, 2010
4. यादव, रामजी, ग्रामीण विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ.-7, 2003

5. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
6. कटारिया, सुरेन्द्र एवं तैद गुडजन, भारत में ग्रामीण विकास रणनीतियाँ एवं चुनौतियाँ, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर, 2008
7. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
8. सिंह, कटार, ग्रामीण विकास सिद्धान्त नीतियाँ एवं प्रबन्ध, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
9. कटारिया, सुरेन्द्र, भारत में सामाजिक नीति, आर.बी.एम.ए. पब्लिशर्स, जयपुर, पृ.-7-8, 2009
10. दयाल, मनोज, विकास संचार अर्थ अवधारणा एवं प्रक्रिया पाठ, प्रकाशक वर्ध मान महावीर खुला वि० विद्यालय, कोटा, 2008

---

**Corresponding Author**

**Renu Bala\***

M.A, M.Phil. (Political Science)